- बृहस्पतिवार आरती

जय वृहस्पति देवा, ऊँ जय वृहस्पति देवा...
छिन छिन भोग लगाऊँ, कदली फल मेवा ।
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी..
जगतपिता जगदीश्वर, तुम सबके स्वामी ।
चरणामृत निज निर्मल, सब पातक हर्ता...
सकल मनोरथ दायक, कृपा करो भर्ता ।
तन, मन, धन अर्पण कर, जो जन शरण पड़े...
प्रभु प्रकट तब होकर, आकर द्घार खड़े ।
दीनदयाल दयानिधि, भक्तन हितकारी...
पाप दोष सब हर्ता, भव बंधन हारी ।
सकल मनोरथ दायक, सब संशय हारो...
विषय विकार मिटाओ, संतन सुखकारी।
जो कोई आरती तेरी, प्रेम सहित गावे...
जेठानन्द आनन्दकर, सो निश्चय पावे ।
सब बोलो विष्णु भगवान की जय...
बोलो वृहस्पतिदेव भगवान की जय ।

आप बृहस्पत देव के साथ- साथ बृहस्पतिवार के दिन भगवान विष्णु जी की आरती व लक्ष्मी माता आरती का पाठ कर सकते हैं, क्योंकि यह दिन मुख्य रूप से भगवान विष्णु को भी समर्पित होता है।

https://www.radheradheje.com/brihaspativar-vrat-katha-aarti-vidhi-mahatva/